मासिक पत्रिका मई 2018

"सब काम धर्मानुसार, अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करना चाहिए।"-महर्षि दयानन्द सरस्वती

॥ ओ३म् ॥

आर्य समाज कैलाश-ग्रेटर कैलाश -1 (पंजी.)

ARYA SAMAJ KAILASH-GREATER KAILASH-I (Regd.) Regn. No. 3594/1968

New Delhi-110048 • Tel.: 29240762, 46678389 • E-mail : samajarya@yahoo.in • Web.: www.aryasamajgk1.org

An ISO 9001:2015 Certified Institution

विजय लखनपाल	विजय भाटिया	अमर सिंह पहल
प्रधान	मंत्री	कोषाध्यक्ष

सुकर्मी दु:खी और कुकर्मी सुखी क्यों दीखते हैं?

कर्मों पर विचार करते हुए भौतिकवादी का एक बड़ा ज़बर्दस्त प्रश्न रह जाता है जिसका अध्यात्मवादी को उत्तर देना होगा। प्रश्न यह है कि अगर कर्मों का फल मिलता है, अच्छे कर्मों का अच्छा, बुरे कर्मों का बुरा, तो क्या कारण है कि सत्कर्मी लोग संसार में दु:खी पाये जाते हैं, कुकर्मी लोग सुखी पाये जाते हैं? होना तो यह चाहिए था सत्कर्मी, सदाचारी-अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह का पालन करनेवाले सुखी दिखलाई देते; झूठे, अनाचारी, दुराचारी लोग दु:खी दिखलाई देते। अगर कर्म का सिद्धान्त सही सिद्धान्त है, तो यह उल्टी गंगा क्यों बह रही है? इसका क्या उत्तर है?

(क) यह धारणा ही गलत है कि सुकर्मी दु:खी तथा कुकर्मी सुखी हैं-सबसे पहली बात तो यही है कि यह समझना कि सत्कर्मी दु:खी होते हैं, कुकर्मी सुखी होते हैं-यह धारणा ही ग़लत है। कभी-कभी जो बाहर से दीखता है वह भीतर से नहीं होता। अपने को दु:खी दीखनेवाला भीतर से सुखी तथा मस्त होता है, अपने को सुखी दीखनेवाला ही जानता है कि भीतर से वह क्या है? इसके अतिरिक्त सब सुकर्मी दु:खी हों, सब कुकर्मी सुखी हों-ऐसा भी नहीं होता। यह कहना ठीक होगा कि कुछ सुकर्मी दु:खी दीखते हैं, कुछ कुकर्मी सुखी दीखते हैं-प्रश्न का यही रूप ठीक होगा। साधारण तौर पर यह शंका क्यों की जाती है कि सत्कर्मी दु:खी पाये जाते हैं, कुकर्मी सुखी पाये जाते हैं? इसका एक कारण है। वह कारण क्या है? वह कारण एक उदाहरण से स्पष्ट हो जाएगा। छींक तो सबको आती है, परन्तु अगर कोई जुलूस में हाथी पर बैठा छींक रहा हो, तो सभी कहने लगते हैं-देखो, वह छींक रहा है। छींकता कौन नहीं! परन्तु जो हाथी पर बैठा है उसकी छींक की सब लोग चर्चा करने लगते हैं। इसी तरह कुछ सत्कर्मी-सदाचारी दु:खी होते हैं, कुछ कुकर्मी-दुराचारी सुखी भी होते हैं; सब नहीं, कुछ। परन्तु क्योंकि हमारी सुकर्म तथा कुकर्म की संकल्पना के साथ उनका दु:खी अथवा सुखी होना मेल नहीं खाता, इसलिए मानो वे हाथी पर बैठे सबको दीख रहे होते हैं, इसलिए उनके दु:ख-सुख की अनावश्यक तौर पर चर्चा होने लगती है। उस चर्चा में कोई ऐसा तथ्य नहीं होता जिसके आधार पर एक नियम कल्पित कर लिया जाय या एक परिणाम निकाल लिया जाय।

(ख) कर्मों का फल शनै:-शनै: पकता है-भौतिकवादी का कहना है कि अगर 'कर्मों' का नियम 'कारण-कार्य' का ही आध्यात्मिक जगत् में चल रहा नियम है, तो यह तो होना चाहिए कि अच्छे कर्मों का अच्छा फल हो, बुरे कर्मों का बुरा फल हो। अच्छे-बुरे से हमारा अभिप्राय सामाजिक अच्छे-बुरे से नहीं है। आज के सामाजिक नियमों की पृष्ठ-भूमि में आज एक काम अच्छा हो सकता है, सामाजिक नियमों में परिवर्तन हो जाने पर वही काम बुरा हो सकता है। किसी समय बाल-विवाह, सती हो जाना सत्कर्म था, आज ये असत्कर्म हैं। सामाजिक अच्छाई-बुराई को जो परिवर्तनशील है छोड़ भी दिया जाय, तो भी निरपेक्ष अच्छाई-बुराई ही रह जाती है। ईमानदारी, सच्चाई, दूसरे को दु:ख न देना आदि निरपेक्ष-सत्कर्म है; बेईमानी, ठगी, धोखा देना, पर-पीड़ा आदि निरपेक्ष कुकर्म हैं। भौतिकवादी का प्रश्न यह है कि जो लोग ईमानदार हैं, सच्चे हैं, दूसरों की सेवा

में रत हैं, वे दु:ख क्यों भोगते हैं ? जो बेईमान हैं, झूठे हैं, दूसरों पर अत्याचार करते हैं, वे सुख क्यों भोगते हैं ?

इस प्रश्न का उत्तर देते हुए कर्म-व्यवस्था के व्याख्याकार मनु महाराज अपनी मनुस्मृति के चतुर्थ अध्याय के 174वें श्लोक में लिखते हैं-

अधर्मेणैधते तावत् ततो भद्राणि पश्यति
ततः सपत्नान् जयति समूलस्तु विनश्यति।

मनु महाराज का कहना है कि दुष्कर्म करने वाला पहले फूलता-फलता दीखता है, जीवन में आगे-ही-आगे बढ़ता जाता दीखता है **(अधर्मेणैधते तावत्)**, उसके आद उसे दुनिया के सब सुख प्राप्त हो गये हैं-ऐसा लगने लगता है **(ततो भद्राणि पश्यति)**, इतने अच्छे दिन आ जाते हैं कि उसके शत्रु भी उससे परास्त हो जाते हैं **(ततः सपत्नान् जयति)**, परन्तु अन्त में वह दिन आ जाता है जब उसका जड़-मूल से विनाश हो जाता है। **(समूलस्तु विनश्यति)**। मनु महाराज ने अपने अनुभव की बात लिखी है; दुनिया में जो-कुछ हो रहा हे, उसे देखकर यह लिखा है। मनु महाराज का कहना है कि कुकर्मी का फूलना-फलना कुछ ही दिनों का होता है, ऊपर से ऐसा दिखलाई देता है, भीतर से उसकी जड़ खोखली हो रही होती है। प्रत्येक कुकर्मी अपने दामन के भीतर झाँककर मनु महाराज के इस फ़तवे की गवाही दे सकता है।

इसी अनुभव को मनुस्मृति के एक दूसरे श्लोक में बड़े मनोरंजक रूप में कहा गया है। चतुर्थ अध्याय के 172-173वें श्लोकों में लिखा है-

नाधर्मश्चरितो लोके सद्यः फलति गौरिव
शनैराकृन्तमानस्तु कर्तुर्मूलानि कृन्तति।
यदि नात्मनि पुत्रेषु न चेत्पुत्रेषु नप्तृषु
न त्वेव तु कृतोऽधर्मःकर्तुर्भवति निष्फलः।

धर्म-अधर्म, सत्कर्म-असत्कर्म, अच्छाई-बुराई एक बीज के समान हैं। ज्यों ही इन बीजों को जीवन की भूमि में हम बोते हैं, त्यों ही अधर्म, असत्कर्म, बुराई के बीज के साथ उसकी जड़ को काटनेवाला एक कीड़ा उसके साथ-साथ ऊपर आने लगता है। जैसे ज़मीन में गाड़ा हुआ बीज एकदम पौधा नहीं बन जाता, वह अंकुरित होता है, ज़मीन को काटकर उभरता है, तना बनता है, वैसे ही उस बीज के भीतर पड़ा हुआ उसकी जड़ को काटनेवाला अधर्म, असत्कर्म, बुराई का कीड़ा एकदम नहीं, परन्तु शनैः शनैः-धीरे-धीरे-जड़ को काटता जाता है, और अन्त में वह समय भी आ जाता है जब दुष्कर्मों के जीवन-वृक्ष की सब जड़ें कट जाती हैं, और वह धड़ाम से भूमिसात् हो जाता है। यदि देखने को लगता भी है कि उसे कुकर्म का फल नहीं मिला, तो यह भ्रम है क्योंकि कुकर्म की पुत्रों तक मार जाती है, पुत्र भी उस मार से बचे दीखते हों, तो पौत्र-प्रपौत्र उसका फल भोगते दीखते हैं। कुकर्म करने के बाद यह समझ बैठना कि इसका फल नहीं होगा-नासमझी है। मनु तो कर्म-फल के सम्बन्ध में इतने दृढ़-निश्चयी थे कि उन्होंने कुकर्मी के पुत्र-पौत्रों तक को नहीं छोड़ा।

यह समझ लेने की बात है कि जैसे कोई कुकर्म तत्काल नहीं किया जाता, बहुत समय पहले से उसकी नींव पड़ चुकी होती है, उसका प्लैनिंग हो चुका होता है, वैसे उसकी जड़ को काटने का काम भी तत्काल नहीं होता, बहुत समय पहले से-कुकर्म के बीज पड़ने के समय से ही-कुकर्मी की जड़ काटने का प्लैनिंग भी शुरू हो जाता है। धर्म का तत्काल फल तो उसका संस्कार पड़ जाना है-यह संस्कार कर्म का तत्काल -फल है, परन्तु संस्कार-पर-संस्कार पड़ते-पड़ते वह समय भी आ जाता है जब इन सब कुसंस्कारों के परिणामस्वरूप कुकर्म का प्रत्यक्ष फल भी सामने आ जाता है।

कर्मों के फल के सम्बन्ध में वैदिक विचारधारा की यही मीमांसा है।

■■

मई 2018 मास में साप्ताहिक सत्संग

दिनांक	वक्ता	विषय
06	आचार्य वीरेन्द्र विक्रम (9899908766)	वैदिक व्यवस्था की सामाजिक संग रचना।
13	श्री वेद प्रकाश श्रोत्रिय (9868536762)	स्वेच्छा विषय
20	श्री वेद कुमार वेदालंकार (9810106562)	ईश उपनिषद् का सन्देश
27	श्री राजू वैज्ञानिक (9968308558)	'पिण्ड' (शरीर) में ब्रह्म दर्शन के उपाय।

अप्रैल मास में प्राप्त दान राशि:—

नाम	राशि	नाम	राशि	नाम	राशि
श्री निपुण अहुजा एवं श्रीमती ऋचा चौधरी	50,000/-	श्रीमती सुदेश चोपड़ा	3,100/-	श्री राजेन्द्र कुमार वर्मा	1,100/-
		श्री प्रताप गुलियानी	3,100/-	श्रीमती उषा रेहानी	1,100/-
डॉ. विनोद मलिक	21,000/-	सुश्री आदर्श भसीन	3,100/-	श्रीमती लीला बिष्ट	1,100/-
डॉ. विमला टिक्कु	21,000/-	श्रीमती शशि रानी मेहता	3,100/-	श्रीमती मंजु बहल	1,000/-
श्रीमती सन्तोष मुंजाल	20,000/-	श्रीमती सुधा गर्ग	3,100/-	श्री अमर सिंह पहल	1,000/-
श्री शादी लाल गेरा	12,100/-	श्रीमती विमला कपूर	2,500/-	श्री विजय कपूर	1,100/-
श्री एस.सी. गर्ग	11,000/-	श्री सुख सागर ढींगरा	2,500/-	कर्नल गोपाल वर्मा	1,100/-
श्री मनोहर लाल अहुजा	8,000/-	श्री सुशील कुमार जौली	2,500/-	आर्य समाज-कालका जी	1,100/-
श्री राजीव चौधरी	6,200/-	श्री सुनील अबरोल	2,500/-	श्रीमती कुशल मित्तल	1,100/-
तनेजा फाउण्डेशन C/o श्री आर.के. तनेजा	6,200/-	श्रीमती कान्ता भारद्वाज	2,500/-	आर्य समाज-सफदरजंग इन्कलेव	1,100/-
		श्री ऋषि राजवाल	2,100/-		
श्री अरुण बहल	6,100/-	श्रीमती शारदा भाटिया	2,100/-	श्री सत्येन अबरोल	1,100/-
श्रीमती सुशील गुलाटी	5,700/-	श्री अशोक चोपड़ा	2,100/-	सुश्री दीपिका सहाय	1,100/-
श्रीमती अमृत पॉल	5,100/-	आर्य समाज-जी.के.-2	2,100/-	श्री आर.के. सुमानी	1,000/-
श्री सुनील अबरोल	5,100/-	श्री आर.के. वर्मा	2,100/-	श्रीमती चन्दु सुमानी	1,000/-
श्री राकेश खुल्लर	5,100/-	श्री जुगल किशोर खन्ना	2,100/-	श्री गौरव सुमानी	1,000/-
श्री योगराज अरोड़ा	5,100/-	श्रीमती विमला कपूर	2,100/-	श्री के.के. कौल एवं परिवार	700/-
श्रीमती उषा मरवाह	5,100/-	श्री अनिल बहल	2,100/-	श्रीमती अर्चना वीर	501/-
श्री राजीव भटनागर	5,100/-	श्रीमती बाला अशोक शर्मा	2,100/-	श्री अरुण मदान	501/-
श्रीमती सीमा पॉल	5,100/-	श्रीमती चन्द्रकला पहल	2,000/-	आर्य समाज-सन्त नगर	501/-
डॉ. एस.एस. यादव	5,000/-	श्रीमती आशा रखेजा	2,000/-	श्री चड्डा परिवार	500/-
श्रीमती सुदर्शन बजाज	3,600/-	श्रीमती उमा रस्तोगी	2,000/-	श्रीमती शशि मल्होत्रा	500/-
श्रीमती प्रेम शर्मा	3,200/-	श्री विजय कृष्ण लखनपाल	1,100/-	श्रीमती किरण वर्मा	500/-
श्रीमती रक्षा पुरी	3,100/-	श्रीमती सत्या ढींगरा	1,100/-	श्री सुभाष चन्द्र अमर	500/-
श्री प्रेम कृष्ण बहल	3,100/-	श्री बी.आर. मल्होत्रा	1,100/-	श्री प्रेम मेहता	500/-
श्री एस.सी. सक्सेना	3,100/-	श्री दयानन्द मनचन्दा	1,100/-	श्रीमती रेणु शर्मा	500/-
श्रीमती चन्द्रप्रभा खाण्डपुर	3,100/-	श्रीमती राधा नागपाल	1,100/-	श्री कमलेश कुमार वोहरा	500/-

अप्रैल माह में पुरोहितों द्वारा एकत्रित धनराशि :

- श्री वेद कुमार वेदालंकार ₹ 501/-
- आचार्य वीरेन्द्र विक्रम ₹ 500/-

वैदिक सैन्टर के लिए प्राप्त दान राशि :

- श्रीमती गीता आनन्द ₹ 25,00,000/-
- M/s ए.जी. इण्डस्ट्रीज़ प्रा. लि. ₹ 15,00,000/-
- M/s मुंजाल शोवा लि. ₹ 5,00,000/-
- श्री सुनील गुप्ता ₹ 5,00,000/-
- श्रीमती सोनिया गुप्ता ₹ 5,00,000/-
- श्रीमती सरस्वती सूद ₹ 1,01,000/-
- श्रीमती वीना कश्यप ₹ 50,000/-

50वाँ वार्षिकोत्सव (स्वर्ण जयन्ती) की रिपोर्ट

आर्य समाज कैलाश-ग्रेटर कैलाश-1 ने अपना ऐतिहासिक स्वर्ण जयन्ती समारोह 9 अप्रैल से 15 अप्रैल 2018 तक बड़ी धूमधाम से मनाया। पहले छः दिन प्रातः का कार्यक्रम 7:00 बजे से 8:30 बजे तक यज्ञ और प्रवचन का था। इस ऋग्वेद महायज्ञ के ब्रह्मा डॉ. वेदपाल थे। सायंकालीन सत्र में 6:30 बजे से 7:30 बजे तक भजन का कार्यक्रम रहा। पहले तीन दिन श्री अंकित उपाध्याय के और शेष दिनों में श्री लक्ष्मीकान्त और श्री तरुण के भजन हुए। भजन के पश्चात् प्रतिदिन डॉ. वेदपाल जी का प्रवचन विभिन्न विषयों जैसे 'सुख का मूल', 'जीवन के प्रति वैदिक दृष्टि', 'कर्म सिद्धान्त', 'किसे मारें किसे बचाएं', 'महर्षि दयानन्द- चिन्तन वैशिष्टय', और 'सौन्दर्य' थे। शनिवार, 14 अप्रैल 2018 को सांयकाल के सत्र में डॉ. वागीश आचार्य ने भी 'क्या यह संसार असार है?' विषय पर अपने विचार रखे।

स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर अनेक विशेष कार्यक्रम भी आयोजित किए गये। 10 अप्रैल 2018 को 10 वर्ष तक की आयु के बच्चों की रंगभरना, चित्रकारी एवं भाषण प्रतियोगिताएँ आयोजित की गई। 11 अप्रैल 2018 को बच्चों की प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता आयोजित की गई। इन प्रतियोगिताओं के विजेताओं को आकर्षक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। 12 अप्रैल 2018 को प्रातः 10:30 बजे से दोपहर 12:30 बजे तक महिला सम्मेलन का आयोजन किया गया। सम्मेलन में डॉ. सुनीति और डॉ. वेदपाल के प्रवचन हुए। सम्मेलन के अन्त में श्रीमती संतोष मुंजाल की ओर से सभी के लिए प्रीतिभोज का आयोजन किया गया। शनिवार 14 अप्रैल 2018 को महर्षि दयानन्द धर्मार्थ चिकित्सालय में एक निःशुल्क स्वास्थ्य जाँच शिविर का आयोजन डॉ. विनोद मलिक (जनरल और लैपरोस्कोपिक सर्जन) की देखरेख में किया गया। इस शिविर का 200 के लगभग व्यक्तियों ने लाभ उठाया।

मुख्य समारोह रविवार 15 अप्रैल 2018 को प्रातः 8:00 बजे यज्ञ की पूर्णाहुति से आरम्भ हुआ तथा शेष कार्यक्रम निर्माणाधीन वैदिक केन्द्र के स्थान पर लगाए हुए भव्य पण्डाल में सम्पन्न हुए। कार्यक्रम के अध्यक्ष, महाशय, धर्मपाल, चयैरमैन, एम.डी.एच. एवं प्रधान, आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली थे। इस कार्यक्रम में श्री पवन मुंजाल, चैयरमैन, एम.डी., सी.ई.ओ., हीरो मोटोकॉर्प लमिटेड मुख्य अतिथि थे। स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती और श्रीमती संतोष मुंजाल ने आशीर्वाद दिया। श्रीमती शिखा राय, नेता सदन, द.दि.न. निगम, श्री सुभाष आर्य, पूर्व महापौर, श्री रामनाथ सहगल, उपप्रधान, डी.ए.वी. कॉलेज मैनेजिंग कमेटी और आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, श्री आनन्द चौहान, जनरल सैक्रेटरी, रितनन्द बलदेव एजुकेशन फाउण्डेशन और डायरेक्टर एमिटि, ठाकुर विक्रम सिंह, राष्ट्रीय अध्यक्ष, राष्ट्र निर्माण पार्टी, श्री विनय आर्य, महामन्त्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, मुंजाल परिवार के श्री सुमन मुंजाल, श्री सुनील मुंजाल, टंकारा ट्रस्ट के श्री अजय सहगल, सनातन धर्म सभा ग्रेटर कैलाश-2 के प्रधान श्री रजनीश गोयनका, श्री गुनमीत सिंह, आर्किटेक्ट, श्री योगराज अरोड़ा, डायरेक्टर, सिलेक्ट सिटी वाक, चैयरमैन, एरोन ग्रुप इत्यादि महानुभावों ने भी अपनी उपस्थिति से कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

कार्यक्रम में वैदिक केन्द्र और अतिथि गृह का औपचारिक नामकरण भी किया गया। वैदिक केन्द्र का नाम, 'बृजमोहन मुंजाल वैदिक केन्द्र' और अतिथि गृह का नाम, 'महाशय धर्मपाल अन्तर्राष्ट्रीय अतिथि गृह' रख दिया गया।

आर्य समाज में चल रही उपनिषद् की कक्षाओं में उपस्थित रहने वाले व्यक्तियों को प्रमाण पत्र दिये गये।

श्री राजीव चौधरी, वरिष्ठ उप-प्रधान ने वैदिक केन्द्र के निर्माण पर प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की। महाशय धर्मपाल ने अपना अध्यक्षीय सम्बोधन दिया। तत्पश्चात् मुख्य अतिथि श्री पवन मुंजाल ने सम्बोधन किया। उन्होंने अपने सम्बोधन में कहा कि उनके परिवार का आर्य समाज कैलाश-ग्रेटर कैलाश-1 का घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है। वह इस भवन निर्माण परियोजना में पूर्ण होने में आवश्यकता अनुसार अपना तथा परिवार का सहयोग देते रहेंगे।

अन्तोगत्वा डॉ. वागीश आचार्य और डॉ. वेदपाल ने उपस्थित श्रोताओं को अपने ज्ञानवर्धक प्रवचन से प्रभावित किया।

श्री विजय लखनपाल, प्रधान ने अन्त में सभी अतिथियों और उपस्थित जनों का धन्यवाद किया। इस समारोह का मंच संचालन राजेन्द्र कुमार वर्मा ने कुशलता पूर्वक किया। सभा का समापन शान्ति पाठ के साथ सम्पन्न हुआ।

समारोह के पश्चात् डॉ. विनोद मलिक के सौजन्य से ऋषि लंगर का प्रबंध था। ■■

स्वर्ण जयन्ती समारोह – झलकियाँ

(रविवार, 15 अप्रैल 2018)

स्वर्ण जयन्ती समारोह - झलकियाँ

(रविवार, 15 अप्रैल 2018)